मुहूर्त

एक साधारण प्रक्रिया में सभी प्रकार के मुहूर्त की गणना करने के लिए क्रमशः निम्न पांच तथ्यों पर विचार करना चाहिए।

1. अयन शुद्धि
2. मास शुद्धि
3. पक्ष शुद्धि
4. पंचांग शुद्धि
5. लग्न शुद्धि

1. अयन

अयन अर्थात् चाल, गति या चलना होता है। अयन दो प्रकार के होते हैं, **पहला उत्तरायन या सौम्यायन।** 14 जनवरी से 15 जुलाई (मकर की रात्रि से मिथुन की रात्रि तक) तक सूर्य का उत्तर की ओर चलना उत्तरायन कहलाता है, जिसे देवताओं का दिन भी कहा जाता है। इसमें लगभग तीन ऋतुएं (शिशिर, वसंत और ग्रीष्म) आती हैं। **दूसरा दक्षिणायन या याम्यायन।** 16 जुलाई से 13 जनवरी (कर्क की रात्रि से धनु की रात्रि तक) तक सूर्य का दक्षिण की ओर चलना दक्षिणायन कहलाता है, जिसे देवताओं की रात्रि भी कहा जाता है। इसमें लगभग तीन ऋतुएं (वर्षा, शरद और हेमन्त) आती हैं।

2. मास

मास शुद्धि के अन्तर्गत सौरमास, चन्द्रमास और सावनमास विचारणीय होते हैं। एक संक्रान्ति से दूसरी संक्रांन्ति तक का समय सौर मास कहलाता है। सौर मास विवाह,

मुन्डन, गृह आरंभ और ग्रह प्रवेश आदि के लिए विचारणीय होता है। एक सौर वर्ष की तुलना में एक चन्द्र वर्ष में लगभग 11 दिन कम होते हैं, जिसके कारण लगभग प्रत्येक तीन वर्ष के बाद अन्तर बढ़कर 32 दिन का हो जाता है। इसलिए सौर वर्ष और चन्द्र वर्ष में तालमेल बैठानें के लिए और ऋतुओं की गड़बड़ी से बचने के लिए लगभग प्रत्येक तीन वर्ष के बाद एक चन्द्रमास अधिक बढ़ा दिया जाता है, जिसे मलमास या पुरूषोत्तम मास के नाम से जाना जाता है। इस चन्द्रमास में यदि एक भी सूर्य संक्रांति न हो तो क्षयमास, यदि दो सूर्य संक्रांति हो तो अधिक मास के नाम से भी जाना जाता है।

चन्द्रमासः- चन्द्रमास पितृकार्य, ग्रह आरंभ और गृह प्रवेश आदि के लिए विचारणीय है। जिस दिन सूर्य और चन्द्रमा के अंशों का अन्तर 180° हो, उस दिन पूर्णिमा तिथि होती है। जैसे-जैसे सूर्य और चन्द्रमा के अंशों का अन्तर कम होता है उसे चन्द्रमास का कृष्ण पक्ष कहते हैं, और जिस दिन सूर्य और चन्द्रमा के अंशों का अन्तर शून्य हो जाता है, उस दिन चन्द्रमास की अमावस्या तिथि होती है। उसके बाद फिर से सूर्य और चन्द्रमा के अंशों का अन्तर बढ़ने लगता है जिसे चन्द्रमास का शुक्ल पक्ष कहते हैं, और जब अन्तर बढ़कर फिर से 180° पर पहुंच जाता है तो चन्द्रमास की पूर्णिमा तिथि होती है। इस तरह पूर्णिमा तिथि से पूर्णिमा तिथि तक एक चन्द्रमास पूर्ण होता है। कई स्थानों में चन्द्रमास की गणना एक अमावस्या तिथि से दूसरी अमावस्या तिथि तक भी की जाती है।

मास की शून्य राशियांः-

शून्य राशियों में शुभ कार्य करने से वंश और धन दोनों के नाश होने की संभावना बढ़ती है।

क्रम संख्या	मास या चन्द्रमास	शून्य राशियां
1	चैत्र	कुम्भ
2	वैशाख	मीन
3	ज्येष्ठ	वृष

4	आषाढ़	मिथुन
5	श्रावण	मेष
6	भाद्रपद	कन्या
7	आश्विन	वृश्चिक
8	कार्तिक	तुला
9	मार्गशीर्ष (अगहन)	धनु
10	पौष	कर्क
11	माघ	मकर
12	फाल्गुन	सिंह

सावन मासः- सावन मास का संबंध वारों की गणना से है। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक एक वार या एक दिन होता है। सावन मास यज्ञ और दैनिक कार्यों आदि के लिए विचारणीय होता है।

3. पक्ष

शुक्ल पक्ष की सप्तमी से कृष्ण पक्ष की सप्तमी तक की सभी तिथियां शुभ और कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक की सभी तिथियां अशुभ होती हैं।

यदि एक ही पक्ष (कृष्ण पक्ष या शुक्ल पक्ष) में दो तिथियां क्षय हो जाएं तो उसे **त्रयोदशदिनात्मक** पक्ष कहते हैं, जो सभी प्रकार के कार्यों के लिए शुभ नही है।

ग्रहण (कुछ विशेष कार्यों के लिए निषेध)

चन्द्र ग्रहण पूर्णिमा के दिन और सूर्य ग्रहण अमावस्या के दिन होता है, इसलिए ग्रहण से पहले तीन दिन और बाद के तीन दिन और एक दिन ग्रहण का, कुल सात दिनों का विचार अवश्य करना चाहिए।

4. पंचांग

पंचांग शुद्धि के अन्तर्गत तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण की शुद्धि को ही पंचांग शुद्धि कहा जाता है, जिसमें इनके नैसर्गिक स्वभाव के आधार पर कार्य के अनुरूप मुहूर्त की गणना की जाती है। यदि किसी विशेष कार्य को आरंभ करने के लिए पांचों तत्वों की नैसर्गिक अनुमति प्राप्त हो तो वह दिन विशेष कार्य करने के लिए श्रेष्ठ, चार की हो तो उत्तम, तीन की हो तो मध्यम, दो या एक की शुभता मिले तो निम्न होता है, और यदि कार्य के अनुरूप पांचों में से एक भी न हो तो त्याज्य मानना चाहिए। आपातकाल में उपायों का प्रयोग करके कार्य किया जा सकता है।

तिथि

चन्द्रमा के भोगांश [longitude of moon] से सूर्य का भोगांश [longitude of sun] घटाने पर प्राप्त अंशो को 12° से भाग करने पर जो भागफल प्राप्त होता है उसे तिथि कहते हैं। जब चन्द्रमा और सूर्य एक ही राशि और एक ही अंश पर हों अर्थात् दोनो के अंशों का अन्तर शून्य हो तो अमावस्या तिथि होती है। यदि दोनो का अंतर 180° हो तो पूर्णिमा तिथि होती है। कुल तिथियां 30 होती हैं। 15 तिथियां शुक्ल पक्ष की और 15 तिथियां कृष्ण पक्ष की होती हैं।

	शुक्लपक्ष	कृष्णपक्ष
अशुभ तिथियां	1,2,3,4,5	11,12,13,14,30
मध्यम (न शुभ न अशुभ) तिथियां	6,7,8,9,10	6,7,8,9,10
शुभ तिथियां	11,12,13,14,15	1,2,3,4,5

शुद्ध तिथिः- वे तिथियां जो एक ही सूर्योदय को छू पाती हैं, शुद्ध तिथि कहलाती हैं।

क्षय तिथिः- वे तिथियां जो एक भी सूर्योदय को नही छू पाती हैं, क्षय तिथि कहलाती हैं।

वृद्धि तिथिः- वे तिथियां जो दो सूर्योदय को छू पाती हैं, वृद्धि तिथि कहलाती हैं।

दोनों पक्षों की तिथियां, उनके स्वामी और उनका नैसर्गिक स्वभाव आदि निम्न प्रकार से हैंः-

क्रम संख्या	दोनो पक्षों की तिथियां	तिथियों के स्वामी	तिथियों के नैसर्गिक स्वभाव	त्याज्य कार्य
1	प्रतिपदा (1)	अग्नि	वृद्धिप्रद	काष्टसंचय
2	द्वितीया (2)	ब्रह्मा	मंगलप्रद	उबटन प्रयोग
3	तृतीया (3)	पार्वती (गौरी)	बलाप्रद	
4	चतुर्थी (4)	गणेश	खलप्रद	
5	पंचमी (5)	नाग (सर्प)	लक्ष्मीप्रद	
6	षष्ठी (6)	स्कन्द (स्वामी कार्तिकेय)	यशप्रद	काष्टसंचय, तेल प्रयोग
7	सप्तमी (7)	सूर्य	मित्रप्रद	आंवला स्नान
8	अष्टमी (8)	शिव	द्वन्दप्रद	मांस भक्षण
9	नवमी (9)	दुर्गा	उग्रप्रद	आंवला स्नान
10	दशमी (10)	यमराज	सौम्यप्रद	उबटन प्रयोग
11	एकादशी (11)	विश्वेदेवा	आनन्दप्रद	उपनयन संस्कार
12	द्वादशी (12)	विष्णु (हरि)	यशप्रद	
13	त्रयोदशी (13)	कामदेव	जयप्रद	उबटन प्रयोग
14	चतुर्दशी (14)	शिव	उग्रप्रद	क्षौरकर्म (बाल कटवाना)
15	पूर्णिमा (15)	चन्द्रमा	सौम्यप्रद	
30	अमावस्या (30)	पितर	मित्रप्रद	काष्टसंचय, आंवला स्नान, मैथुन

नोटः-

परिहारः- षष्ठी शनैश्चरे तैलं, महाष्टम्यां पलानिच।

तीर्थक्षौरं चतुर्दशयां, दीपमाल्यां च मैथुनम्।।

अर्थात्ः- षष्ठी तिथि शनिवार के दिन हो तो तेल का प्रयोग, दुर्गामहाष्टमी के दिन मांस भक्षण, चतुर्दशी के दिन तीर्थ में क्षौर कर्म (बाल कटवाना) और दीपावली की रात्रि मैथुन निषेध नही है।

कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा शुभ और शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा अशुभ होती है।

रविवार के दिन यदि नवमी (दोनो पक्षों की) तिथि हो तो भी काष्ट संचय न करें।

सभी तिथियों को उनके नैसर्गिक गुणों के आधार पर विभाजित किया गया है जैसेः- **नन्दा तिथियां** (1,6,11) सभी प्रकार की शिक्षा आरंभ करने के लिए शुभ, **भद्रा तिथियां** (2,7,12), 16 संस्कारों के लिए शुभ, **जया तिथियां** (3,8,13) नई दवा शुरू करना, गृहस्थ प्रयोग के लिए नई वस्तु खरीदना, शत्रु पर आक्रमण करना और शस्त्र विद्या का आरंभ करने के लिए शुभ, **रिक्ता तिथियां** (4,9,14) ऑपरेशन करवाने के लिए शुभ और **पूर्णा तिथियां** (5,10,15) सभी प्रकार के कार्य के लिए शुभ, अमावस्या (30) पूजा-पाठ और दान आदि के लिए शुभ है।

अनेकों नवीन और शुभ कार्यों के लिए निम्न तिथियां त्याज्य हैं।

पक्षरन्ध्र या छिद्रा तिथियांः- दोनो पक्ष की 4,6,8,9,12 और 14 वीं तिथि के दिन यदि कार्य आवश्यक हो तो, 4 तिथि की प्रथम 8 घटी (192 मिनट) छोड़ दें, 6 तिथि की प्रथम 9 घटी (216 मिनट) छोड़ दें, 8 तिथि की प्रथम 14 घटी (336 मिनट) छोड़ दें, 9 तिथि की प्रथम 25 घटी (600 मिनट) छोड़ दें, 12 तिथि की प्रथम 10 घटी (240 मिनट) छोड़ दें और 14 तिथि की प्रथम 5 घटी (120 मिनट) छोड़ दें।

निम्न तिथियों में शुभ कार्य न करें।

मास शून्य तिथि	
मास	**तिथियां (दोनो पक्षों की)**
भाद्रपद	**1,2**
श्रावण	**2,3**
वैशाख	**12**
पौष	**4,5**
आश्विन	**10,11**
मार्गशीर्ष (अगहन)	**7,8**
चैत्र	**8,9**

केवल कृष्ण पक्ष की शून्य तिथियां	
मास	**तिथियां**
कार्तिक	**5**
आषाढ़	**6**
फाल्गुन	**4**
ज्येष्ठ	**14**
माघ	**5**

केवल शुक्ल पक्ष की शून्य तिथियां	
मास	**तिथियां**
कार्तिक	**14**
आषाढ़	**7**
फाल्गुन	**3**
ज्येष्ठ	**13**
माघ	**6**

नक्षत्र शून्य तिथियां (शुभ कार्य निषेध)

नक्षत्र	तिथियां (दोनो पक्षों की)
अश्लेषा	**12**
उत्तराषाढ़ा	**1**
अनुराधा	**2**
मघा	**5**
तीनों उत्तरा	**3**
स्वाती / चित्रा	**13**
हस्त/मूल	**7**
कृत्तिका	**9**
पूर्वाभाद्रपद	**8**
रोहिणी	**6, 11**

नोटः उपरोक्त तिथि नक्षत्रों के तात्कालिक योग के दिन शुभ कार्य न करें।

होलाष्टक तिथियांः- फाल्गुन शुक्ल पक्ष की अष्टमी से फाल्गुन की पूर्णिमा तक का समय होलाष्टक कहलाता है। इनमे अनेकों शुभ कार्य निषेध होते हैं।

तिथि गण्डातः- नन्दा तिथि (1,6,11) के शुरू में 1 घटी (24 मिनट) और तिथि (5,10,15) के अंत की 1 घटी (24 मिनट) छोड़कर शुभ कार्य कर सकते हैं।

पंच पर्व तिथियांः- यदि निम्न तिथियों में सूर्य संक्रांति हो तो, तिथियां शुभ कार्य के लिए त्याज्य हैं।

1 कृष्ण पक्ष की 8 तिथि
2 कृष्ण पक्ष की 14 तिथि

3 पूर्णिमा तिथि

4 अमावस्या तिथि

5 संक्रांति तिथि

यदि आवश्यक कार्य 16 संस्कार और संपत्ति से संबंधित हो तो सूर्य संक्रांति से आगे और पीछे 16 घटी (384 मिनट) को छोड़कर कार्य किया जा सकता है।

आवश्यक कार्य यदि रिक्ता तिथियों (4,9,14) और अमावस्या के दिन करना हो तो चावल दान करके कार्य किया जा सकता है।

वार

सूर्योदय से सूर्योदय तक के समय को वार की संज्ञा दी गई है। रविवार, मंगलवार, सूर्य संक्रान्ति, वृद्धि योग और हस्त नक्षत्र के दिन ऋण (कर्ज) नही लेना चाहिए। इंगित समय में लिया हुआ ऋण (कर्ज) आसानी से चुकता नही होता और मानसिक तनाव का कारण बनता है, जबकि ये दिन ऋण (कर्ज) चुकता करने के लिए श्रेष्ठ बताए गए हैं। बुधवार धन संग्रह, निवेश करना और बैंक में जमा करना आदि के लिए उत्तम वार है, इस दिन किसी को धन नही देना चाहिए।

वारों के नैसर्गिक स्वभाव, देवता आदि निम्न प्रकार से हैं:-

क्रम संख्या	वार	वारों के स्वामी ग्रह	वारों के देवता		त्याज्य कार्य
1	रविवार	सूर्य	शिव		
2	सोमवार	चन्द्रमा	दुर्गा		
3	मंगलवार	मंगल	कार्तिकेय		धन उधार लेना/ गृह प्रवेश
4	बुधवार	बुध	विष्णु		
5	गुरूवार	बृहस्पति	ब्रह्मा		

6	शुक्रवार	शुक्र	इन्द्र		मांस भक्षण
7	शनिवार	यम/काल			यात्रा

रविवारः को ध्रुव/स्थिर संज्ञक वार कहा जाता है। ध्रुव/स्थिर संज्ञक होने के कारण रविवार स्थिर कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- गृह आरम्भ करना, गृह प्रवेश करना, बड़े उद्योग लगाना या आरंभ करना और उपनयन संस्कार आदि के लिए शुभ है। इस दिन ऋण (कर्ज़) नही लेना चाहिए।

सोमवारः को चर संज्ञक वार कहा जाता है। चर संज्ञक वार होने के कारण सोमवार चर कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- यात्रा आरंभ करना, व्यापार के लिए सामान खरीदना और नौकरी के लिए आवेदन देना या नौकरी आरंभ करना आदि के लिए शुभ है। पशुओं से संबंधित कार्य त्याज्य हैं।

मंगलवारः को उग्र/क्रूर संज्ञक वार कहा जाता है। उग्र/क्रूर संज्ञक होने के कारण मंगलवार उग्र कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- शस्त्रों से संबंधित कार्य आरंभ करना, हमला या फौजी कार्यवाही शुरू करना और शिकायत करना आदि के लिए शुभ है। इस दिन गृह प्रवेश निषिद्ध है। इस दिन ऋण (कर्ज़) नही लेना चाहिए।

बुधवारः को मिश्र संज्ञक वार कहा जाता है। मिश्र संज्ञक होने के कारण बुधवार सभी कार्यों के लिए सामान्य सहायक वार है जैसेः- लेखन कार्य, व्यापारिक कार्य, गणित संबंधित कार्य और बैंक में खाता खुलवाना आदि के लिए शुभ है। पशुओं से संबंधित कार्य त्याज्य है। धन संग्रह करना उत्तम है। इस दिन धन कदापि नही देना चाहिए।

बृहस्पतिवारः को क्षिप्र/लघु संज्ञक वार कहा जाता है। लघु संज्ञक होने के कारण बृहस्पतिवार लघु कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- विवाह कार्य आरंभ करना और आध्यात्मिक कार्य आरंभ करना आदि के लिए शुभ है।

शुक्रवारः को मृदु/मैत्री संज्ञक वार कहा जाता है। मृदु/मैत्री संज्ञक होने के कारण शुक्रवार मृदु कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- आरामदायक वस्तुओं को खरीदना, संगीत या ड्रामा आदि का आरम्भ करना और नृत्य कला आदि के लिए शुभ है।

शनिवारः को तीक्ष्ण/दारूण संज्ञक वार कहा जाता है। तीक्ष्ण/दारूण संज्ञक होने के कारण शनिवार तीक्ष्ण कार्यों के लिए सहायक वार है जैसेः- नई दवा आरंभ करना और दीक्षा लेना आदि के लिए शुभ है। इस दिन यात्रा करना निषिद्ध है। पशुओं से संबंधित कार्य त्याज्य है।

यदि कोई मंगलवार संबंधित आवश्यक कार्य शुक्रवार के दिन करना हो तो ऐसी आपातकाल स्थिति में वार होरा का प्रयोग करके मंगलवार संबंधित कार्य शुक्रवार के दिन किया जा सकता है।

वार होरा

एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक 24 होरा होती हैं। प्रत्येक होरा एक घण्टे की होती है। जिस वार में होरा की गणना करनी हो उस वार के सूर्योदय से अगले एक घण्टे तक उसी वार की होरा होती है, उसके बाद दूसरी होरा उस वार से छठे वार की होती है, तीसरी होरा दूसरी होरा वार से छठे वार की होती है यही क्रम आगे चलता रहता है जैसे माना बुधवार को सूर्योदय 7 बजे हुआ तो पहली होरा 7 से 8 बजे तक बुधवार की होगी, दूसरी होरा 8 से 9 बजे तक सोमवार की होगी, तीसरी होरा 9 से 10 बजे तक शनिवार की होगी, चौथी होरा 10 से 11 बजे तक बृहस्पतिवार की होगी। यही क्रम अगले सूर्योदय तक चलता रहेगा।

आवश्यक कार्य अनुकूल वार न मिलने पर भी करना पड़े तो मंगलवार, शनिवार और रविवार को रत्न दान करके कार्य किया जा सकता है।

राहुकाल

राहुकाल में प्रत्येक स्थान के स्थानीय समय के अनुसार नवीन कार्य आरंभ न करें।

सोमवार 7.30 am से 9 am तक

मंगलवार 3.00 pm से 4.30 pm तक

बुधवार 12.00 noon से 1.30 pm तक

बृहस्पतिवार 1.30 pm से 3.00 pm तक

शुक्रवार 10.30 am से 12 noon तक

शनिवार 9.00 am से 10.30 am तक

रविवार 4.30 pm से 6.00 pm तक

रविवार के दिन एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	1	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
2	2			
3	3			
4	4	अशुभ	विष	यात्रा/शुभ कार्य
5	5			
6	6	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
7	7	अशुभ	संवर्तक (कुयोग)	

8	8			
9	9			
10	10			
11	11	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
12	12	अशुभ	क्रकच/दग्ध (अधम)/13/ हुताशन	यात्रा/शुभ कार्य
13	13			
14	14			
15	15 (पूर्णिमा)			
16	30 (अमावस्या)			

सोमवार के दिन एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	1			
2	2	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
3	3			
4	4			
5	5			
6	6	अशुभ	विष, हुताशन	यात्रा/शुभ कार्य
7	7	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
8	8			
9	9			
10	10			
11	11	अशुभ	क्रकच/अधम	यात्रा/शुभ कार्य

			दग्ध/13	
12	12	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
13	13			
14	14			
15	15 (पूर्णिमा)			
16	30 (अमावस्या)			

मंगलवार के दिन एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	1	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
2	2			
3	3	शुभ	सिद्ध	
4	4			
5	5	अशुभ	अधम (दग्ध)	यात्रा/शुभ कार्य
6	6	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
7	7	अशुभ	विष/हुताशन	
8	8	शुभ	सिद्ध	
9	9			
10	10	अशुभ	क्रकच/अधम/13	यात्रा/शुभ कार्य
11	11	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
12	12			
13	13	शुभ	सिद्ध	
14	14			
15	15 (पूर्णिमा)			
16	30 (अमावस्या)			

बुधवार के दिन एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग		योगों के नाम		निषेध कार्य
1	1	अशुभ		संवर्तक (कुयोग)		
2	2	शुभ	अशुभ	सिद्ध	विष	
3	3	अशुभ		मृत्यु, अधम (दग्ध)		यात्रा/शुभ कार्य
4	4					
5	5					
6	6					
7	7	शुभ		सिद्ध		
8	8	अशुभ		मृत्यु/हुताशन		यात्रा/शुभ कार्य
9	9	अशुभ		क्रकच/अधम/13		यात्रा/शुभ कार्य
10	10					
11	11					
12	12	शुभ		सिद्ध		
13	13	अशुभ		मृत्यु		यात्रा/शुभ कार्य
14	14					
15	15 (पूर्णिमा)					
16	30 (अमावस्या)					

बृहस्पतिवार के दिन एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध

कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	1			
2	2			
3	3			
4	4	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
5	5	शुभ	सिद्ध	
6	6	अशुभ	दग्ध	यात्रा/शुभ कार्य
7	7			
8	8	अशुभ	क्रकच/अधम/13 /विष	यात्रा/शुभ कार्य
9	9	अशुभ	मृत्यु/हुताशन	यात्रा/शुभ कार्य
10	10	शुभ	सिद्ध	
11	11			
12	12			
13	13			
14	14	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
15	15 (पूर्णिमा)	शुभ	सिद्ध	
16	30 (अमावस्या)			

शुक्रवार के दिन एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	1	शुभ	सिद्ध	

2	2	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
3	3			
4	4			
5	5			
6	6	शुभ	सिद्ध	
7	7	अशुभ	मृत्यु/क्रकच/अधम /13	यात्रा/शुभ कार्य
8	8	अशुभ	दग्ध (अधम)	यात्रा/शुभ कार्य
9	9	अशुभ	विष	यात्रा/शुभ कार्य
10	10	अशुभ	हुताशन योग	यात्रा/शुभ कार्य
11	11	शुभ	सिद्ध	
12	12	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
13	13			
14	14			
15	15 (पूर्णिमा)			
16	30 (अमावस्या)			

शनिवार के दिन एक विशेष **तिथि** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

क्रम संख्या	दोनो पक्षों की तिथियां	शुभ और अशुभ योग	योगों के नाम	निषेध कार्य
1	1			
2	2			
3	3			
4	4	शुभ	सिद्ध	
5	5	अशुभ	मृत्यु	यात्रा/शुभ कार्य
6	6	अशुभ	क्रकच/अधम/13	यात्रा/शुभ कार्य

7	7	अशुभ		विष		यात्रा/शुभ कार्य
8	8					
9	9	शुभ	अशुभ	सिद्ध	दग्ध (अधम)	यात्रा/शुभ कार्य
10	10	अशुभ		मृत्यु		यात्रा/शुभ कार्य
11	11	अशुभ		हुताशन योग		यात्रा/शुभ कार्य
12	12					
13	13					
14	14	शुभ		सिद्ध		
15	15 (पूर्णिमा)	अशुभ		मृत्यु		यात्रा/शुभ कार्य
16	30 (अमावस्या)					